# शाला और समुदाय

## डी.एड. प्रथम वर्ष

**मुख्य अवधारणाएँ व नमूने के प्रश्न**

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 1 | 1 | समाज में विविधता, असमानता व भेदभाव |

**मुख्य अवधारणाएँ**

1. सभी लोग एक दूसरे से रंग–रूप, गुण, पसंद–नापसंद, रूचि आदि में फर्क होते है।
2. भिन्नता के कारण कोई भी समाज समृद्ध होता है– लेकिन लोगों को साथ में जीना व एक दूसरे का सम्मान करना सीखना होगा।
3. गैर–बराबरी, असमानता– कुछ लोगों के पास न अवसर हैं और न संसाधन, जो दूसरों के पास हैं।
4. किसी देश में लोगों के बीच सांस्कृतिक विविधता कैसे उत्पन्न होता है।

**प्रश्न –**

1. आपके अपने कक्षा में किस–किस तरह के भिन्नता वाले लोग हैं– वे किन बातों में एक दूसरे से भिन्न हैं ?
2. शहरों में कुछ लोग फुटपाथ पर सोते हैं तो कुछ लोग आलीशान बंगलों में वातानुकूलित कमरों में सोते हैं– इस भिन्नता के क्या कारण हो सकते हैं ? क्या आपके अनुसार यह भिन्नता उचित है?
3. हमारे आसपास खाने और पहनावे में किस तरह की भिन्नता दिखती है– इनमें से कौन सी भिन्नताएं असमानता के कारण है और कौन सी सांस्कृतिक या रूचि की विविधता के कारण है ?
4. आप अपने परिवेश में कितनी भाषा या बोली बोलने वालों से परिचित हैं ? क्या आप उन भाषा या बोलियों में कुछ वाक्य या शब्द लिख सकते हैं ?
5. आपके राज्य के शहरों में अलग–अलग राज्यों से आये लोग रहते हैं। ये लोग यहां किस लिये आकर बसे होंगे – आपके अनुसार इससे आपके राज्य को क्या फायदा मिला। क्या इससे कुछ समस्यायें भी हुई?
6. एक गांव या शहर में कई धर्म या भाषा बोलने वाले रहते हों तो उससे वहां के लोगों को क्या फायदा होता और किस तरह के चुनौतियों का सामना करना पड़ता?

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 1 | 2 | विविधता एवं भेदभाव |

**मुख्य अवधारणाएँ**

- विविधता के कारण फर्क किस्म के लोगों के प्रति मन में आशंकाएं उत्पन्न होती हैं और उनके बारे में पूर्वाग्रह बन जाते हैं।
- पूर्वाग्रह – दूसरों के बारे बिना जांचे जो धारणाएं बना लेते है.......
- पूर्वाग्रह के चलते किसी खास समूह के प्रति भेदभाव बरता जाता है – जैसे लड़के व लड़कियों के बीच....
- रूढीबद्ध धारणा stereotype किसी समूह के कुछ व्यक्तियों के व्यवहार के आधार पर पूरे समूह का बिना परखे एक खास चित्रण बनाना.....उसके कारण भेदभाव करना
- रूढीबद्ध धारणा के कारण हर इन्सान को अनोखे व अलग व्यक्ति के रूप में देखना
- रूढीबद्ध धारणा के कारण उस समूह के लोगों के व्यवहार को खास तरीके से ढालना
- भेदभाव का एक उदाहरण –जाति
- रूढीबद्ध धारणा के चलते शारीरिक रूप से फर्क लोगों पर असर

**प्रश्न –**

1. जो लोग देख नहीं सकते हैं उनके बारे में कोई दो पूर्वाग्रह बतायें और ऐसे पूर्वाग्रहों के कारण उनके जीवन और व्यवसाय पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?
2. रूढीबद्ध धारणायें हमें हर व्यक्ति को अनोखे व अलग व्यक्ति के रूप में देखने से कैसे रोकते है– उदाहरण सहित बतायें।
3. अगर समाज के सभी लोग अनुसूचित जातियों के प्रति रूढिबद्ध धाराणाओं को छोड़ दें तो क्या असमानता खत्म हो जायेगी ?
4. जिन लोगों के शरीर का कोई अंग (आंख, कान, हाथ, पैर...) ठीक से काम न करें ऐसे लोगों को आजकल किस नाम से जाना जाता है? इस शब्द का तात्पर्य क्या है।
5. अलग–अलग सामाजिक परिस्थितियों में आप अपने सामुदायिक परिचय में कौन सी जानकारी देते हैं, उदाहरण दें।

6. वर्णों की विशेष सोपानबद्धता की दैवी उत्पत्ति की कहानी बताए। इस सोपानबद्ध क्रम का व्यवसाय एवं उनके सामाजिक स्तर से क्या संबंध है? आपके विचार?
7. जाति को परिभाषित करने का प्रयास करें। किन सामाजिक परिस्थितियों में आप अपने जाति परिचय का व्यवहार करते हैं?
8. इसाई एवं मुसलमान धर्मों में जातिवाद का विकास आपकों वर्ण और जाति धारणाओं के लचिलेपन के बारे में क्या बताता है?
9. जातिगत पूर्वाग्रह एवं भेदभाव का आपने कोई प्रत्यक्ष उदाहरण अपने शाला अनुभव कार्यक्रम में देखा है या अनुभव किया हो, ज्ञात करवाएँ। (परस्पर बच्चों के बीच, या बच्चों एवं शिक्षक के बीच)
10. सामाजिक भेदभाव दूर करने के लिये आप अपने विद्यालय में क्या उपाय करेंगे?
11. शहरी एवं ग्रामीण व्यक्तियों तथा विभिन्न जातियों एवं धर्मों के प्रति पूर्वाग्रह के क्या कारण हो सकते हैं? उन्हें दूर करने के लिए अपने सुझाव दीजिये।
12. शहरी लोग केवल पैसे की चिंता करते हैं, लोगों की नहीं उस पूर्वाग्रह से आप कहॉ तक सहमत हैं?
13. जो लोग देख नहीं सकते हैं उनके बारे में कोई दो पूर्वाग्रह बतायें और ऐसे पूर्वाग्रहों के कारण उनके जीवन और व्यवसाय पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?
14. अगर समाज के सभी लोग अनुसूचित जातियों के प्रति रूढ़िबद्ध धारणाओं को छोड़ दें तो क्या असमानता खतम हो जायेगी?
15. पूर्वाग्रह को स्पष्ट करते हुये बताइये कि इससे व्यक्ति का व्यवहार किस प्रकार से प्रभावित होता है?
16. सामाजिक समानता लाने के लिए आप किस प्रकार अपना सहयोग दे सकते हैं ?
17. आपके अनुसार जिस व्यक्ति के साथ भेदभाव होता है, उसे कैसा महसूस होता है। उदाहरण देकर समझाइये।
18. काम के आधार पर होने वाले भेदभाव को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
19. विविधता की इज्जत करना, उसे मूल्यवान मानना समानता सुनिश्चित करने में बहुत ही महत्वपूर्ण है। विवेचना कीजिये।
20. समानता को एक अहम् मूल्य क्यों माना गया है?
21. शहरी एवं ग्रामीण लोगों में किस प्रकार के अंतर देख सकते है। इस विविधता के क्या कारण हैं?
22. डॉ. अम्बेडकर की बाल्यावस्था में एक स्टेशनमास्टर ने उनकी सहायता क्यों नहीं की?

| इकाई क. | पठन सामग्री क. | शीर्षक |
| --- | --- | --- |
| 1 | 4 | वर्ण और जाति |

## मुख्य अवधारणाएँ

1. जाति व्यवस्था एक बहुत जटिल व्यवस्था है, अतः इसके सरल प्रस्तुतियों से जो छवि बनती है वह वास्तविकता को नहीं दर्शाती है।
2. भारतीय समाज में लोगों की पहचान उनके वर्ण, जाति, उपजाति, गोत्र और कुल के आधार पर होता है । (हरेक का संक्षेप में परिचय दें)
3. वर्ण इसके आधार पर लोगों का धार्मिक या कर्मकांडीय हैसियत तय किया जाता है। इसका एक आधार वर्ण व्यवस्था के शुरूआत के बारें में की गई कल्पना है– जिसके अनुसार उच्च वर्ण प्राचीन दैवी पुरूष के ऊपरी अंगों से पैदा हुए और निचले वर्ण निचले अंगों से । समस्त जातियों को चार वर्णों में बांटा जाता है – इनमें से तीन उच्च वर्ण माने गये हैं ओर एक निम्न वर्ण। इनके अलावा कई जातियां हैं जिन्हें अस्पृश्य माना जाता है और उन्हें चार वर्णों की व्यवस्था के बाहर रखा जाता है । इन सब बातों के बावजूद वर्ण व्यवस्था में कई अस्पष्टतायें हैं और लचीलापन भी है।

4. जाति -

- ❖ जातियाँ अंतर्विवाही इकाइयाँ हैं।
- ❖ वे सोपानबद्धता के अनुसार क्रमबद्ध हैं। (ऊंच–नीच)
- ❖ प्रत्येक जाति का अपना विशिष्ट जातिगत व्यवसाय होता है।
- ❖ एक जाति के सदस्य सामान्यतः एक समान संस्कृति के साझीदार होते हैं।
- ❖ भारत के कई भागों में विभिन्न जातियों के सामाजिक नियंत्रण तथा संघर्ष समाधान के लिए गांव के भीतर तथा कुछ ग्राम समूहों के बीच जाति पंचायत जैसे तंत्र हैं।

**प्रश्न–**

1. अलग–अलग सामाजिक परिस्थितियों में आप अपने सामुदायिक परिचय में कौन सी जानकारी देते हैं, उदाहरण दें।
2. वर्णों की विशेष सोपानबद्धता की दैवी उत्पत्ति की कहानी बताएँ।
3. इस क्रम का व्यवसाय एवं उनके सामाजिक स्तर से क्या संबंध है? आपके विचार?

4. जाति को परिभाषित करने का प्रयास करें। किन सामाजिक परिस्थितियों में आप अपने जाति परिचय का व्यवहार करते हैं?
5. इसाई एवं मुसलमान धर्मों में जातिवाद का विकास आपकों वर्ण और जाति धारणाओं के लचिलेपन के बारे में क्या बताता है?

////////

| इकाई क. | पठन सामग्री क. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 1 | 4.1 | सामाजिक संस्थाएँः निरन्तरता एवं परिवर्तन |

**मुख्य अवधारणाएँ–**

- ❖ जाति एवं जाति व्यवस्था।
- ❖ जाति की विशेषताएँ।
- ❖ जाति का समकालीन रुप।

**प्रश्न**

1. वर्ण और जाति का आपस में क्या सम्बंध है? व्याख्या कीजिए।
2. जाति की सामान्य विशेषताएँ कौन–कौन सी है?
3. धर्मिक शुचिता तथा अशुचिता से क्या आशय है?
4. जाति और व्यवसाय के बीच सम्बंधों की व्याख्या कीजिए।
5. सामाजिक संस्था 'जाति' में किस प्रकार के बदलाव हो रहे हैं? बदलावों को चिन्हित कीजिए।
6. 'संस्कृतिकरण' से आप क्या समझते हैं? सामाजिक प्रस्थिति को उँचा उठाने में यह किस तरह काम करता है?
7. समकालीन जाति व्यवस्था में हो रहे परिवर्तनों की गति को क्या आप पर्याप्त मानते हैं? अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।
8. शिक्षा के माध्यम से लोगों में कौन सी पूँजी का प्रत्यक्ष विकास सम्भव है।
9. जाति व्यवस्था कि मुख्य विशेषताए क्या है, कौन से सामाजिक नियम जाति व्यवस्था को अक्षुण बनाए रखे हैं?
10. ''जातियॉ एक दूसरे से सिर्फ कर्मकांड की दृष्टि से असमान नही है, उनसे यह भी अपेक्षित है कि वे एक–दूसरे की सहयोगी होगी एवं उनमें प्रतिस्पर्धा नही होगी।'' व्याख्या करे। क्या आप इस मत से सहतम है।
11. ''महात्मा गांधी सबसे नीची समझी जाने वाली जातियों के उत्थान के लिए अस्पृश्यता तथा अन्य जातीय प्रतिबधों के उन्मूलन के पक्ष मे समर्थन जुटाने के लिए प्रयत्नशील रहे और साथ ही भू–स्वामी उच्च जातियों को यह आश्वासन देने मे भी सफल रहे कि उनके हितो का भी ध्यान रखा जाएगा। '' ये पक्तियां किस तरह के सामाजिक संघर्ष की और इशारा करती है?

12. स्वतंत्र भारत में जाति व्यवस्था के प्रति होनी वाली प्रतिक्रियाओं पर प्रकाश डालिए।
13. स्वतत्रंता प्राप्ति के पहले और स्वतत्रंता प्राप्ति बाद , स्कूलों में आप किन परिवर्तनों को शामिल करना चाहेगे विशेषतौर पर इनमे पढनें वाले छात्रों के संदर्भ में ?
14. सास्कृतिकरण की प्रक्रिया क्या है ? समझाए।
15. वर्तमान समय में शिक्षिक समाज जातिगत व्यवस्था को किस रूप में देखता है क्या आपको लगता है कि उसके रूढ़िवादी दृष्टिकोण में कोई बदलाव आया है। जाति की पहचान बदलते राजनैतिक व सामाजिक परिवेश मे अभी महत्वपूर्ण स्थान रखे हुए। शिक्षा के योगदान पर प्रकाश डालिए।
16. क्या नौकरी /शिक्षा के अवसरो में जातिगत आधार पर आरक्षण देना क्या जातिगत पहचान को मजबूत बनाए रखने का साधन है या तथाकथित निचली जातियों को उनकी जातिगत पहचान का बंधक बनाऐ रखने का साधन है ?

////////

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 1 | 5 | सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार के स्वरुप |

**मुख्य अवधारणाएँ**

- अवसर , वंचना , बहिष्कार व शोषण
- सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार के स्वरुप
- 'सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार का सामाजिक रुप।
- सामाजिक पूँजी, भौतिक पूँजी एवं सांस्कृतिक पूँजी तथा इनका एक का दुसरे में बदलना।
- सामाजिक स्तरीकरण
- पूर्वाग्रह एवं सामाजिक विषमता के मध्य सम्बंध
- पूर्वाग्रह एवं रुढ़िबद्ध धारणाएँ
- जाति व्यवस्था एवं सामाजिक बदलाव।

**प्रश्न**

1. ''सामाजिक विषमता व्यक्तियों के बीच सहज या 'प्राकृतिक' भिन्नता की वजह से नहीं है, बल्कि यह उस समाज द्वारा उत्पन्न की जाती है जिसमें वे रहते हैं।'' कथन को समझाइये।
2. 1947 में भारत स्वतंत्र हो जाने के बाद, आदिवासियों की जिन्दगी आसान हो जानी चाहिए थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। कारणों का उल्लेख कीजिए।
3. 'सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार एक सामाजिक रुप हैं।' तर्क दीजिए।
4. सामाजिक पूँजी, भौतिक पूँजी एवं सांस्कृतिक पूँजी से क्या आशय है? किसी एक पूँजी को दुसरे पूँजी में कैसे बदला जा सकता है, उदाहरण सहित समझाइये।
5. सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार से आप क्या समझते है? समाज में उपलब्ध इसके विभिन्न स्वरूपों का वर्णन कीजिए।
6. समाज में जातियों में असमानता के क्या कारण हैं? उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है? वर्णन कीजिये।
7. सामाजिक विषमताओं के महत्वपूर्ण कारण के रूप में पूर्वाग्रहों का स्थान निर्धारित कीजियें?
8. 'सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार एक सामाजिक बुराई' पर एक निंबंध लिखिए?
9. सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार लोगों के जीवन में स्वाभाविक कैसे बन गये हैं?

10. आधुनिक शिक्षा व्यवस्था किस तरह सामाजिक असमानताओं को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकती हैं?
11. समावेशी शाला की सामाजिक विषमता के संदर्भ में क्या भूमिका हो सकती हैं?
12. सामाजिक संसाधनों तक पहुंच की असमानता सामाजिक विषमता का पर्याय है, समझाइयें?
13. सामाजिक संसाधन के रूप में पूंजी के तीनों रूपों को समझाइयें?
14. लघु निबंध लिखिए –

    अ. सामाजिक विषमता      ब. सामाजिक स्तरीकरण

15. सामाजिक असामनता एवं बहिष्कार जैसे विषय सामाजिक क्यों माने जाने चाहिये?
16. सामाजिक एवं आर्थिक असामनता में सामान्यतः एक मजबूत संबंध होता है, कैसे?
17. क्या सामाजिक पूंजी को आर्थिक पूंजी में बदला जा सकता हैं, कैसे?
18. व्यक्तियों के बीच स्वाभाविक भिन्नताएँ किस तरह सामाजिक विषमता पैदा करती है?
19. ''सामाजिक विषमताओं लोकतंत्र के मार्ग में रोड़ा हैं'' उदाहरण देकर समझाइयें?
20. शिक्षकों एवं पालकों में विषमताओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाना क्यों आवश्यक है?

/////////

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 1 | 6 | भला ये जेण्डर क्या है? |

**मुख्य अवधारणाएँ–**

- ❖ 'जेण्डर' के मायने।
- ❖ समाज में लड़के–लड़कियों (औरत–मर्द) की भूमिकाएँ क्या है?
- ❖ जेण्डरीकरण (सामाजीकरण)।
- ❖ लिंग और जेण्डर में फर्क।
- ❖ प्राकृतिक लिंग–सामाजिक लिंग तथा दोनों का आपस में संबध।
- ❖ प्राकृतिक लिंग एवं सामाजिक लिंग की रचना।
- ❖ सामाजिक एवं लैंगिक अन्तर के कारण ? तथा वैज्ञानिक सत्य।

**प्रश्न**

1. रूथ हार्टले के अनुसार सामाजीकरण की प्रकियाओं को उदाहरण सहित समझाइये।
2. जेण्डर क्या है? समझाइये।
3. ''सामाजिक लिंग (जेण्डर) प्रकृति का रचा नहीं है, समाज का रचा है।'' कथन की विवेचना कीजिए।
4. परिवार में होने वाले उन व्यवहारों को चिन्हित कीजिए जिससे एक शिशु का सामाजीकरण होता है।
5. ''जेण्डर परिवर्तनशील है।'' इस कथन की पूष्टि में अपना तर्क दिजिए।
6. समाजिक लिंग (जेण्डर) से आप क्या समझते हैं? यह प्रकृति का रचा नहीं समाज का रचा है। तर्क दीजिए।
7. सामाजीकरण से क्या आशय है? तथा परिवार में होने वाले उन व्यवहारों को चिन्हित किजिए जिससे एक शिशु का सामाजीकरण/जेण्डरीकरण होता है।
8. 'माँ बनना' और 'बच्चे पालना' इनमें से कौन प्राकृतिक लिंग का हिस्सा है तथा कौन सामाजिक लिंग का ? तर्क दिजिए।
9. प्राकृतिक लिंग (सेक्स) तथा सामाजिक लिंग (जेण्डर) में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

10. महिलायें मोटर सायकिल नहीं चला सकती हैं क्योंकि वे साड़ी या बुरखा पहनती हैं। पुरूष लोगों के हाथ से अच्छी रोटी नहीं बन सकती, क्योंकि उनका हाथ सख्त होते हैं। कमला भसीन का आलेख – जेण्डर क्या है के आधार पर इन कथनों का परीक्षण कीजिए।
11. लड़कियों को घर पर किस–किस तरह के असमान व्यवहार का सामना करना पड़ता है?
12. जैविक संरचना के आधार पर कहा गया है कि महिलाओं की तुलना में पुरूष कमजोर है। लेकिन हम समाज में देखते हैं कि महिलाओं को अधिक कमजोर मानते हैं। इसका क्या कारण हो सकता है?
13. वसन्ता कजनबिरान का कथन – ''महिलाओं से यह आशा की जाती है कि आप सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के प्रति मातृत्व भाव उडेलती रहें तथा यह सब प्राकृतिक समझा जाता है।'' उनका वास्तविक आशय क्या है? इनमें से सही पर सहीं का निशान लगायें।
    – महिलायें मां होने के अलावा और बहुत कुछ हो सकती हैं
    – महिलायें प्राकृतिक रूप से मां बनकर लालन–पोषण करने के लिए बनी हैं। (विकल्प चुनने के लिए अपना तर्क भी दें।)
14. लड़कियां कुछ खास तरह के काम जैसे, मैकेनिक बनना, फुटबाल खेलना, आदि करने के बारे में सोचते भी नहीं हैं। इसका क्या कारण हो सकता है? क्या लड़कियों को बचपन से ही इस तरह के काम व खेलों में प्रोत्साहन मिले तो वे भी ये कर सकते हैं?
15. औरतों की सामाजिक भूमिका किस हद तक उनके शारीरिक बनावट पर आधारित है?
16. समाज सभी में स्त्रीयोचित व पुरूषोचित व्यवहार कैसे बिठाता है?
17. लड़कियॉ मॉं–बाप के लिए बोझ है, यह रूढ़िबद्ध धारणा एक लड़की के जीवन को किस तरह प्रभावित करती है?
18. किसी व्यक्ति के खानपान एवं रहन सहन के आधार पर जेण्डरीकरण को समझाइये।

///////////

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 1 | 7 | काडर |

## मुख्य अवधारणाएँ

- शिकारी जीवन व्यतीत करने वाले लोगों का सामाजिक जीवन/संगठन।
- लिंगभेद रहित समाज।

## प्रश्न

1. ''काडर समाज की ऐसी विशेशताओं को चिंहांकित कीजिये, जो उन्हें औद्योगिक समाज से भिन्न बनाती हैं?
2. आधुनिक समाजों का सामीप्य किस तरह जनजातीय समाजों के आदर्शों को परिवर्तित कर रहा हैं?
3. काडर समाज में महिलाओं की स्थिति में जो परिवर्तन आ रहे थे, क्या आपकों वे जरूरी व उचित लगते हैं।
4. आपके समाज में महिलाओं की दशा में जो परिवर्तन आ रहे हैं, उनका वर्णन करें और यह भी बताएं कि इनमें से कौन से तत्व उनके स्वतंत्र विकास के लिए सहायक हैं।
5. क्या जनजातीय समाजों को उनकी स्थिति पर छोड़ देना चाहिये, क्यों ?
6. विभिन्न प्रकार के मानव समुदाय शिक्षा व्यवस्था के लिए चुनौती बने हुए हैं, कैसे ?
7. आधुनिक शालायें किस तरह जनजातीय समाजों में सामंजस्य स्थापित करते हुए उनके विकास में योगदान दे सकती है ?
8. अपने आसपास की किसी जनजाति की विशेशताओं का वर्णन करते हुए उनके लिए शिक्षा के आवश्यकता को समझाइये ?
9. जनजातीय समाजों में आधुनिक शिक्षा किस तरह लोकतंत्र को स्थापित करने में सहायक होगी?

///////////

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 2 | 8 एवं 9 | संविधान की उद्देशिका और मौलिक अधिकार |

**मुख्य अवधारणाएँ–**

भारत के लोग व सरकार जिन उद्देश्यों के लिए प्रयास करेगें उन्हें संविधान की उद्देशिका लिपिबद्ध किया गया है।

ये उद्देश्य हैं– सबके लिए

- ❖ सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, सुनिश्चित करना
- ❖ हर व्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित करना
- ❖ सबके लिए अवसरों में समता सुनिश्चित करना और
- ❖ सभी लोगों के बीच भाईचारा स्थापित करना

इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हमने ऐसा राज्य स्थापित किया जो

- ❖ प्रभुत्व–संपन्न हो
- ❖ लोकतंत्रात्मक हो ,
- ❖ पंथ–निरपेक्ष हो ,
- ❖ गणराज्य हो और और समाजवादी उद्देश्यों के लिए काम करें

**मौलिक अधिकार की अवधारणा**

- ❖ प्रमुख मौलिक अधिकार और उनका मतलब।
- ❖ सब बच्चों को निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार
- ❖ मौलिक अधिकारों का हनन होने पर उपचार के तरीके

**प्रश्न**

1. आप अपने गांव या शहर के समाज की समीक्षा कर बताएं कि संविधान की उद्देशिका किस हद तक पूरा हो पाया है या नहीं।
2. पंथ निरपेक्ष शासन से क्या तात्पर्य है – क्या शासकीय शालाओं में इस सिद्धांत का पालन होता है।

3. लोकतंत्रात्मक शासन की स्थापना में अशिक्षा व असमानता किस तरह व्यवधान डालते हैं, चर्चा करें।
4. उद्वेशिका में दिये गये उद्वेश्यों की प्राप्ती के लिए प्रभुसत्ता की जरूरत क्या है– चर्चा कीजिए।
5. भारतीय संविधान में द्वारा प्रदत्त आरक्षण समानता के मौलिक अधिकार का उल्लंघन है या उसे प्राप्त करने के सहायक है, चर्चा/वर्णन कीजिये।
6. दक्षिण अफ्रीका के संविधान में नागरिक को दिए गये अधिकारों का वर्णन कीजिए तथा इसकी तुलना भारत के नागरिकों को प्राप्त अधिकारों से कीजिए।
7. एक मोहल्ले में कुछ जाति के लोगों को यह कहकर बसने नहीं दिया गया कि वे मांस खाते हैं – यह उनके किस मौलिक अधिकार का हनन है, समझाकर लिखें।
8. पंचायतें जो निर्माण कार्य कराती है उसमें महिला मजदूरों को पुरूषों की तुलना में कम मजदूरी दी जाती है। यह उनके किस मौलिक अधिकार का हनन है कारण सहित समझाएं।
9. छत्तीसगढ़ के मजदूर जब काम के लिए दूर के राज्यों में पलायन करते है तब बच्चों सहित पूरे परिवार वालों को कम वेतन पर बंधुआ मजदूरों की तरह कई महीने ईंट भट्टों में काम करना पड़ता है– तब उन लोगों के किन–किन मौलिक अधिकारों का हनन होता है।
10. एक गरीब आदिवासी बच्चा कुपोषण के कारण मर जाता है – यह उसके किस मौलिक अधिकार का हनन है– उस बच्चे को बचाना किस की जिम्मेदारी है।
11. अगर कोई किसी को मार डालने की धमकी देता है तो वह किस मौलिक अधिकार का उल्लघंन कर रहा है । उसे रोकने की जिम्मेदारी किसकी है।
12. अकसर अदालतें किसी व्यक्ति को मौत की सजा देती है– क्या यह उस व्यक्ति की जीवन का मौलिक अधिकार का हनन है । चर्चा कीजिये।

//////////

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 2 | 10 | आर्थिक विकास एवं सामाजिक अवसर |

## मुख्य अवधारणाएँ

- ❖ आर्थिक विकास को केवल प्रति व्यक्ति औसत आय की वृद्धि के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए
- ❖ हर व्यक्ति के स्तर में महत्वपूर्ण उद्वेश्यों की प्राप्ति में आय एक माध्यम है। वर्णन कीजिए।
- ❖ वास्तविक विकास : आय और सम्पत्ति के अतिरिक्त 'किसी कार्य को कर पाने की क्षमता' का विकास हो रहा है या नहीं।
- ❖ 'जीवन को अपनी इच्छानुसार जीने के लिए जरूरी मौके उपलब्ध हैं कि नहीं।
- ❖ मानवीय योग्यता का प्रसार विकास की प्रक्रिया में केन्द्रीय लक्षण हो।
- ❖ योग्यता से आशय : कार्य के अनेक विकल्पों में चयन करने के क्षमता और स्वतंत्रता का होना है।
- ❖ गरीबी का आशय योग्यता से वंचित रह जाना है (सामान्य स्वरूप –आय में कमी)।
- ❖ विकास कार्यक्रम की सफलता का मानदंड : उत्पादन एवं आय में वृद्धि, लोगों के सहज जीवनयापन का स्तर है।
- ❖ आर्थिक विकास में प्राथमिक शिक्षा का महत्व।
- ❖ व्यक्ति की स्वतंत्रता के संवर्धन में शिक्षा और स्वास्थ्य का महत्व।
- ❖ आर्थिक संवृद्धि और रोजगार सृजन के मध्य सम्बंध?
- ❖ आर्थिक संवृद्धि और समाज के कमजोर वर्ग सुदृढ़ीकरण।

## प्रश्न

1. अमर्त्य सेन के अनुसार व्यक्ति की क्षमता वर्धन में 'शिक्षा और स्वास्थ्य' किस प्रकार सहायक है? समझाइए।
2. शिक्षा और स्वास्थ्य विकास के लिए क्यों जरूरी है? अपना तर्क दीजिए।
3. अमर्त्य सेन के अनुसार गरीबी की व्याख्या कीजिए।
4. आर्थिक विकास में प्राथमिक शिक्षा का महत्व समझाइये।
5. 'केवल राष्ट्रीय आय या प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि ही विकास के लिए पर्याप्त नही है।' इसे अमर्त्य सेन के लेख के आधार पर समझाइये।
6. अन्याय व दमन का सामना करने के लिए शिक्षा किस प्रकार सहायक हो सकता है? समझाइये।

7. अमर्त्य सेन के अनुसार किसी क्षेत्र के विकास के मायने बताइये।
8. व्यक्ति के स्वतंत्रता संवर्धन में शिक्षा एवं स्वास्थ्य किस प्रकार सहायक हैं? विस्तार से वर्णन कीजिए।
9. ''शिक्षित लोग अपने हकों की बेहतर रक्षा कर पाते है।'' कथन को समझाइये।
10. 'किसी व्यक्ति की शिक्षा और स्वास्थ्य समाज के अन्य लोगों पर भी असर डालता है।' इस कथन को उदाहरण सहित समझाइये।

//////////

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 2 | 10.1 | प्राथमिक शिक्षा एक राजनैतिक मुद्दा |

**पठन सामग्री का सांराश व प्रमुख अवधारणाएं**

❖ पढ़ लिख पाना तथा प्रारंभिक गणित की संक्रियाएं कर पाना आधुनिक समाज में सार्थक जीवनयापन के लिए अनिवार्य बन गया है।

❖ प्राथमिक शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के उतप्रेरक का कार्य करती है। शिक्षा के प्रसार के फलस्वरूप जाति, वर्ग, नर–नारी भेद आदि की परम्परागत विषमताएँ कम हो जाती हैं–इसी प्रकार इन विषमताओं के कम होने के कारण शिक्षा का प्रसार और फैल जाता है।

❖ स्वतंत्रता आंदोलन के नेता से लेकर आज के ग्रामीण गरीब यह बखूबी समझते हैं कि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक स्तर में उन्नयन हो सकता है। फिर भी शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान क्यों नहीं दिया जा रहा है।

❖ शिक्षा संबंधी सरकारी आँकड़े वास्तविकता को बहुत ही बढ़ा–चढ़ाकर पेश करते हैं– इनका एक कारण यह भी है कि प्रत्येक स्तर के सरकारी कर्मचारियों के अपने हित इस प्रकार की जालसाजी के साथ जुड़े रहते हैं। राष्ट्रीय संदर्श सर्वेक्षण और जनगणना की आँकड़ों को अधिक विश्वसनीय मान रहे हैं

❖ साक्षरता व शिक्षित लोग संबंधी आंकड़े क्या कहते हैं–

- सारे देश की औसत साक्षरता दर कम ही है– पुरूषों में से 64 प्रतिशत और महिलाओं में से केवल 39 प्रतिशत ही साक्षर हैं। पूर्वी एवं दक्षिण पूर्वी देशों के विकासशील देशों की औसत से भी कम हैं।
- विभिन्न राज्यों के बीच साक्षरता दर में बहुत अंतर है– राजस्थान में केवल 20 प्रतिशत महिलाएं साक्षर हैं जबकि केरल में 86 प्रतिशत साक्षर है।
- स्त्रियों और पुरूषों की शैक्षिक सफलताओं में भी बहुत अंतर हैं। जब अभावग्रस्तता के सभी कारण एक साथ मिल जाते हैं–अर्थात् नारी होने की विवशता का किसी पिछड़े क्षेत्र में बसी अनुसूचित जाति से संयोग होता है तो फिर इन अतिवंचित समूहों में साक्षारता नाममात्र ही रह जाती हैं।

- भारत में युवा निरक्षरों का अनुपात बहुत अधिक है। आधुनिक भारत की शिक्षा व्यवस्था का सबसे दुखद पक्ष युवापीढ़ी को यह चिरंतन निरक्षरता ही है।
- देश भर में 12–14 वर्ष की ग्रामीण लड़कियों में से आधी तो ऐसी ही हैं जिनका नाम कभी किसी स्कूल में लिखा ही नहीं गया। यह अनुपात उत्तर प्रदेश,छत्तीसगढ़–मध्यप्रदेश और बिहार में दो तिहाई हो जाता है–किन्तु राजस्थान में तो 87 प्रतिशत इसी वर्ग में आती हैं। इसी प्रकार 10–14 वर्ष आयु की मात्र 42 प्रतिशत ग्रामीण लड़कियाँ ही स्कूल जा पाती हैं।
- इनमें से भी एक समूह शाला में दर्ज होने पर भी शाला जाते नहीं हैं।
- प्रवेश के बाद बहुत से बच्चों की अपनी शिक्षा जारी नहीं रख पाने की विवशता। पहली कक्षा में प्रविष्ठ बच्चों में से केवल आधे ही चार वर्ष बाद भी स्कूल में दिखायी पड़ते हैं।
- भारत में 25 वर्ष से अधिक आयु के लोगों ने औसतन 2.4 वर्ष ही स्कूल में बिताए हैं। इसकी तुलना में चीन में 5 वर्ष, श्रीलंका में 7.2 वर्ष और दक्षिण कोरिया में 9.3 वर्ष की औसत आंकी गई है।

❖ नीति निर्देशक सिद्धांत में शिक्षा का सार्वभौमीकरण की बात कही गई है लेकिन इसके लिये उठाये गये कदम सर्वथा अपर्याप्त है। उदाहरण के लिए दस साल तक के बच्चों के लिए 58 बच्चों पर एक शिक्षक ही उपलब्ध है– जिसका मतलब है कि हम दस साल के बच्चों तक को शिक्षित करने के लिए असमर्थ हैं। यह परिस्थिति हाल तक बनी हुई है।

❖ 1992 शिक्षा नीति की आलोचनाः घिसी पिटी बातों के अलावा कोई ठोस कदम नहीं। इस कारण समस्या और गंभीर हो गई है। इसी से निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अत्यन्त ही समतावादी नारे लगाते हुए वास्तविक जीवन में बहुत विषमताकारी व्यवहार करने में अब किसी को झिझक नहीं होती। सम्पन्न परिवारों के बच्चों के लिए तो लागत से बहुत ही कम कीमत पर उच्च शिक्षा की व्यवस्था की जाती है, जबकि गरीब परिवारों के बच्चों का बाल श्रमिकता की चक्की में पिसते रहना ही पूरी तरह उचित माना जा रहा है।

❖ एक अधिक प्रभावी नीति का निर्धारण उन स्पष्ट लक्ष्यों के निर्धारण से प्रारंभ होगा जो महत्वाकांक्षापूर्ण होते हुए भी व्यावाहारिक हों। फिर, उन लक्ष्यों की सिद्धि के लिए उपयुक्त कार्यक्रमों की रचना और अन्ततः उन्हें लागू करने के लिए आवश्यक संसाधनों को आबंटन करना होगा। तभी सफलता की कुछ संभावना बन सकती है

1. **राजकीय व्यय का महत्व -** शिक्षा पर राजकीय व्यय की वृद्धि निःसंदेह स्वागतयोग्य है। वस्तुत राजकीय व्यय का अभाव ही शिक्षा व्यवस्था की दुर्दशा का एक महत्वपूर्ण कारण रहा है। यदि हम शिक्षा पर खर्च का सकल राष्ट्रीय उत्पाद के अनुसार क्रम निर्धारण करें तो विश्व के 116 देशों में भारत 82 वें स्थान पर आता है। 1968 के बाद से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रत्येक प्रारूप ने इस व्यय–अनुपात को बढ़ाकर 6 प्रतिशत तक ले जाने का संकल्प व्यक्त किया है, किन्तु अभी तक इस संकल्प की पूर्ति संभव नहीं हो पायी है।
2. 25 वर्षों तक दुर्गतिग्रस्त रहने के बाद 80 के दशक के मध्य से शिक्षा पर खर्च में सकल राष्ट्रीय उत्पाद अनुपात में अच्छा–खासा सुधार हुआ है। इस सुधार के साथ–साथ प्राथमिक शिक्षा के अंश में भी वृद्धि हुई है। यही नहीं, इस अवधि में अंतर्राष्ट्रीय विषमता (शिक्षा–व्यय अनुपात की विषमता) में भी कमी दिखाई पड़ने लगी है।
3. तालिका 6.3 प्राथमिक शिक्षा पर राजकीय व्यय का स्वरूप – क्या दर्शाता है ?
   इस तालिका में वर्ष 1970–71 की कीमतों के आधार पर सरकारी शिक्षा व्यय की वृद्धि दरें अंकित की गई हैं। शिक्षकों की संख्या एवं प्रति शिक्षक सरकारी खर्चे के आँकड़े भी दिये गये हैं। यह प्रति शिक्षक खर्च शिक्षकों के वास्तविक वेतन का परिचायक माना जा सकता है।
   - यद्यपि 80 के दशक की व्यय वृद्धि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अपने उच्चतम औसत स्तर पर रही है, यह दर 10 प्रतिशत प्रति वर्ष से अधिक ही है।
   - किन्तु यह सारी वृद्धि केवल शिक्षकों की वेतन वृद्धि के काम ही आई है।
   - शिक्षकों की संख्या वृद्धि की दर इसी अवधि में सबसे कम रही है। यह शिक्षक संख्या वृद्धि दर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से पहली बार जनसंख्या वृद्धि दर से कम रह गई है। इसी कारण 80 के दशक में छात्र–शिक्षक अनुपात बहुत तेजी से बढ़ा है।
   - 1991 के बाद से तो कई राज्यों में वास्तविक शिक्षा व्यय में कमी भी आने लगी हैं इन्हीं नकारात्मक प्रवृत्तियों का प्रमाण 1991–92 से 1992–93 में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों की संख्या में गिरावट में मिलता है।

❖ 1991 के बाद भारत सरकार व राज्यों ने जो कार्यक्रम उठाए ।कुल मिलाकर ये सभी 'अनौपचारिक शिक्षा' की दिशा में हुए अनेक प्रयासों की श्रृंखला की ही कड़ियाँ हैं।

❖ वस्तुतः प्रत्येक गाँव में निःशुल्क शिक्षा सुव्यवस्थित ढंग से देने वाले, पूरे शिक्षक मंडल द्वारा संचालित पूर्णकालिक विद्यालयों की व्यवस्था करने की आवश्यकता है। उन्हीं में ढंग से पढ़ाई हो पाएगी और छात्र–छात्राएँ भी टिक पाएंगें।

- उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में किये गये सर्वेक्षण से उभरते स्कूल के दयनीय तथ्य।
- निजी शालाएं इसके विकल्प नहीं हो सकते हैं क्योंकि उनमें केवल फीस देने वाले बच्चे पढ़ सकते हैं, अतः केवल शहरी लड़के इनमें ज्यादा पढ़ पाते हैं।
- दो मुख्य कदम –एक तो शिक्षकों की संख्या बढ़ाई जाए, दूसरे यह सुनिश्चित किया जाए कि वे वास्तव में पढाई कराएँ। दूसरा, अभिभावकों की भूमिका को सुदृढ़ करना
- समस्या यही है कि वर्तमान व्यवस्था में अभिभावकों की सतर्कता के लिए किसी प्रकार का स्थान नहीं है। शिक्षक स्थानीय जन समुदाय के प्रति उत्तरदायी नहीं होते–उनकी जवाबदेही सरकार के शिक्षा–विभाग के प्रति ही रहती है।
- उत्तरदायित्व–श्रृंखला की पुनः रचना कर नियंत्रण–कलों को स्थानीय ग्राम्य समुदाय के सुपुर्द करना होगा। तभी शिक्षा के स्तर में सुधार आ पाएगा।
- अनेक अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि भारत के सामान्य नागरिक अपने बच्चों को शिक्षित बनाने को अत्यन्त लालायित हैं। इसी लालसा के कारण जहाँ भी निशुल्क शिक्षा की अच्छी व्यवस्था घर के आसपास मिल पाती है, अभिभावक अपने बच्चों को तुरंत भेजने को तैयार हो जाते हैं।
- हिमाचल प्रदेश का अनुभव
- सबके लिए अनिवार्य शिक्षा का अधिकार देना कहां तक समस्या का समाधान करेगा
- नारी शिक्षा
- शिक्षा के मुद्दे को आधार बना कर वर्तमान व्यवस्था के लिए कोई राजनीतिक चुनौती अभी तक क्यों नहीं पैदा हुई? प्राथमिक शिक्षा की इस घोर उपेक्षा के बाद भी सरकार का निरापद बचे रहना अशिक्षित जन समुदाय की राजनीतिक पंगुता का ही प्रमाण है। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इस मुद्दे को एक महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दा कैसे बनाया जाए?

**प्रश्न**

1 भारत में सामाजिक परिवर्तन में प्राथमिक शिक्षा की क्या भूमिका है।

2 प्राथमिक शिक्षा का प्रसार किस प्रकार सामाजिक असमानता को कम करने में मदद कर सकता है

3 किस राज्य में सबसे अधिक महिलाएं शिक्षित हैं और किस राज्य में सबसे कम महिलाएं शिक्षित हैं।

4 अमर्त्य सेन कितने तरह के अभावग्रस्थता की चर्चा करते हैं – क्या आप कुछ उदाहरण दे सकते हैं।

5 युवाओं में निरक्षरता एक विशेष समस्या क्यों है – क्या आप मानते हैं कि युवा लड़कियों में निरक्षरता और भी विकट समस्या है।

6 अमर्त्य सेन साक्षरता व शिक्षित लोगों के बारें में जो आंकड़े देते हैं उसके अध्ययन से क्या आप बता सकते हैं कि जो बच्चे शाला में दाखिला लेते हैं, वे भी क्यों शिक्षा से वंचित रह जाते हैं।

7 अमर्त्य सेन के अनुसार पिछले 60 वर्षों में सबके लिए शिक्षा का उद्देश्य क्यों नहीं संभव हो पाया ?

8 1986 व 1992 की शिक्षा नीतियों को सेन अपर्याप्त क्यों मानते हैं।

9 सबके लिए शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए अमर्त्य सेन कौन से दो प्रमुख कदमों की सिफारिश करते हैं।

////////

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 3 | 11 | **काम के लिए पलायन** |

**मुख्य अवधारणाएँ–**

काम के लिए पलायन और शिक्षा के मध्य सम्बंध

**प्रश्न–**

1. काम की तलाश में किस जाति और वर्ग के लोग ज्यादा, गाँव छोड़ कर शहर जाते हैं? इस तरह के पलायन से बच्चों की शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. पलायन करने वाले परिवारों के बच्चों की शिक्षा का प्रबंध की एक योजना प्रस्तुत कीजिए। आपके अनुसार इस समस्या का क्या हल हो सकता है?

/ / / / / / /

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 3 | 12 | **शिक्षा कार्य और अधिकार** |

**मुख्य अवधारणाएँ–**

**प्रश्न–**

1. सभी के लिये अनिवार्य शिक्षा कैसे सुनिश्चित करेंगे?
2. श्रमिक बच्चों की शिक्षा, कार्य और अधिकार से आप क्या समझते हैं?
3. औपचारिक शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा से क्या समझते है?
4. शाला अनुभव के दौरान शाला त्यागी छात्रों को विद्यालय वापस लाने के लिये क्या प्रयास किया।
5. बाल श्रमिकों की शिक्षा में समुदाय किस प्रकार सहायता कर सकता है?
6. बाल श्रमिक, दलित, पिछड़े वर्ग की शिक्षा के लिए शासन और समुदाय किस प्रकार से काम कर रहे हैं? विवेचना कीजिए।
7. 6–14 आयु वर्ग के बच्चों के लिए शिक्षा का अधिकार किस प्रकार से है स्पष्ट किजिए?
8. राज्य शासन द्वारा 'अनिवार्य शिक्षा के मध्य किये जा रहे प्रयासों के उल्लेख कीजिए?

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 3 | 13 | दलित आदिवासी और शिक्षा |

**मुख्य अवधारणाएँ–**

- ❖ दलित व आदिवासी बच्चों एवं उनके अभिभावकों के शाला एवं शिक्षा के प्रति विचार एवं उनकी अपेक्षाएँ।
- ❖ दलित एवं आदिवासी बच्चों के लिए चल रही प्रोत्साहन योजनाएँ।
- ❖ जाति, क्षेत्र, धर्म आदि के आधार पर शाला में भेदभाव।
- ❖ स्कूल की संस्कृति की पहचान।
- ❖ बच्चों की मातृभाषा का उनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव

**प्रश्न–**

1. दलित एवं आदिवासी बच्चों के लिए चल रही प्रोत्साहन योजनाएँ बच्चों को किस सीमा तक प्रोत्साहित कर रही है? अपने विचार लिखिये।
2. प्राथमिक शिक्षा में बच्चों की मातृभाषा का उनके व्यक्तित्व में पड़ने वाली प्रभावों पर अपने विचार लिखिये।
3. जाति, क्षेत्र, धर्म आदि के आधार पर बच्चों के साथ शाला में होने वाले भेदभाव का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।
4. स्कूल की संस्कृति से आप क्या समझते हैं? शाला अनुभव कार्यक्रम के दौरान आपने जिस शाला में अनुभव प्राप्त किया है, वहाँ की संस्कृति पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिये।
5. दलित एवं आदिवासी समाज को ध्यान में रख कर शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालिये।
6. ''लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास स्कूलों से सम्भव है।'' इस कथन को उदाहरण सहित समझाइये।

////////

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 3 | 12 | श्रमिक बच्चों के लिये फिक्रमंद लोग<br>(द कंसर्ड़ फॉर वर्किंग चिल्ड्रन)<br>शिक्षा कार्य और अधिकार |

**मुख्य अवधारणाएँ–**

**प्रश्न–**

1. सभी के लिये अनिवार्य शिक्षा कैसे सुनिश्चित करेंगे?
2. श्रमिक बच्चों की शिक्षा, कार्य और अधिकार से आप क्या समझते हैं?
3. औपचारिक शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा से क्या समझते है?
4. शाला अनुभव के दौरान शाला त्यागी छात्रों को विद्यालय वापस लाने के लिये क्या प्रयास किया।
5. बाल श्रमिकों की शिक्षा में समुदाय किस प्रकार सहायता कर सकता है?
6. बाल श्रमिक, दलित, पिछड़े वर्ग की शिक्षा के लिए शासन और समुदाय किस प्रकार से काम कर रहे हैं? विवेचना कीजिए।
7. 6–14 आयु वर्ग के बच्चों के लिए शिक्षा का अधिकार किस प्रकार से है स्पष्ट किजिए?
8. राज्य शासन द्वारा 'अनिवार्य शिक्षा के मध्य किये जा रहे प्रयासों के उल्लेख कीजिए?
9. सभी के लिये अनिवार्य शिक्षा कैसे सुनिश्चित करेंगे?
10. श्रमिक बच्चों की शिक्षा, कार्य और अधिकार से आप क्या समझते हैं?
11. औपचारिक शिक्षा और अनौपचारिक शिक्षा से क्या समझते है?
12. शाला अनुभव के दौरान शाला त्यागी छात्रों को विद्यालय वापस लाने के लिये क्या प्रयास किया।
13. बाल श्रमिकों की शिक्षा में समुदाय किस प्रकार सहायता कर सकता है?
14. बाल श्रमिक, दलित, पिछड़े वर्ग की शिक्षा के लिए शासन और समुदाय किस प्रकार से काम कर रहे हैं? विवेचना कीजिए।
15. 6–14 आयु वर्ग के बच्चों के लिए शिक्षा का अधिकार किस प्रकार से है स्पष्ट किजिए?
16. राज्य शासन द्वारा 'अनिवार्य शिक्षा के मध्य किये जा रहे प्रयासों के उल्लेख कीजिए?

/////////

| इकाई क. | पठन सामग्री क. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 4 | 14 | उपनिवेशवाद और प्रभुत्व के सिद्धांत की तरह शिक्षा |

**मुख्य अवधारणाएँ–**

उपनिवेशवाद शिक्षा को इस नजरिये से देखता है–

1) सभ्य बनाने के मिशन के रुप में।

2) लोगों को अपने अधिकार के अधीन रखने के लिए।

**प्रश्न–**

1. विलियम ऐडम की रिपोर्ट में प्रचलित शिक्षा तंत्र के बारे में क्या बताया गया है–और उन पर किये आलोचना के क्या मायने है? इन बिन्दुओं पर वर्णन कीजिए–

   शिक्षा और धर्म का सम्बंध; शाला में पढ़ाये जाने वाले विषयों के बारे में; शिक्षा के प्रचलन के बारे में; शिक्षा समाज के लिये किस तरह उपयोगी होगा या क्या फायदा होगा?
2. नैतिकता पर आधारित शिक्षा किस अंग्रेजी शासक का मुख्य नजरिया था? और वे किस तरह से भारतीयों को देखते थे?
3. उपयोगितावाद के अनुसार समाज में शिक्षा का क्या उपयोग है? उन्होंने भारत और ब्रिटेन में किस तरह की शिक्षा प्रचलित करनें का प्रयास किया।
4. अंग्रेजी शासन काल में भारत में शिक्षा की नजरिया हमेशा एक जैसे रहा या उसमें बदलाव आते रहे? किस तरह के बदलाव आये?
5. औपनिवेशिक शिक्षा का वर्तमान समय में किस–किस तरह के प्रभाव दिखाई देता है? उदाहरण देकर समझाइये।
6. उपनिवेशवाद की शिक्षा के प्रति पुनर्जागरण के विचारकों के क्या दृष्टिकोण थे? लिखिये।
7. उपनिवेशवाद से किसी भी देश की संस्कृति एवं शिक्षा का विनाश क्यों होता है?
8. शुरूआत में ईस्ट इंडिया कम्पनी भारत में आधुनिक शिक्षा के प्रसार प्रति उत्सुक क्यों नहीं थी?

/ / / / / / / / /

| इकाई क. | पठन सामग्री क. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 5 | 15 | रविन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन |

**मुख्य अवधारणाएँ–**

**प्रश्न–**

1. ज्ञान का उद्देश्य विद्या का आडम्बर नही बल्कि विवके की प्राप्ति है व्याख्या कीजिये।
2. रवीन्द्र नाथ टैगोर की शिक्षा के प्रति क्या दृष्टिकोण था संक्षिप्त विवेचना कीजिये?
3. आप आज के परिस्थिति में किस प्रकार की शिक्षा की वकालत करते हैं?
4. भौतिकतावादी संस्कृति के लिए शिक्षा कहॉ तक जिम्मेदार हैं?
5. जीवन की पूर्णता के रास्ते में लगातार अर्न्तविरोध मिलते रहते हैं लेकिन आगे बढ़ने के लिये इसका होना जरूरी है व्याख्या कीजिये?

///////

| इकाई क. | पठन सामग्री क. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 5 | 16 | गांधी जी की बुनियादी शिक्षा |

**मुख्य अवधारणाएँ–**

**प्रश्न–**

1. महात्मा गांधी के शिक्षा के बारे क्या विचार है? उल्लेख कीजिये।
2. भारतीय के लिए स्वराज्य एवं स्वदेशी के बारे गांधी जी के क्या तर्क थे? वर्णन कीजिये।
3. गॉधी जी लघु उद्योग एवं कुटीर उद्योगों के समर्थक क्यों ? उल्लेख कीजिये।
4. ग्राम स्वराज्य के बारे में गॉधी जी क्या चाहते थे?
5. अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था का विरोध गॉधी जी द्वारा क्यों किया गया था? वर्णन कीजिये।
6. गांधी किस तरह से स्कूल की स्थापना करते हैं।
7. वे किस तरह के समाज का निर्माण करना चाहते थे इस प्रकार की शिक्षा के माध्यम से।

8. गांधी के अनुसार शिक्षकों की क्या भूमिका होनी चाहिए?
9. महात्मा गांधी के अनुसार असली शिक्षा क्या है?
10. किन परिस्थितियों में गांधी राजनीतिक आंदनोलनों के नेता बने? उन्होंने आंदोलनों के क्या रास्ते अपनाएं?
11. गांधी ने आधुनिकवाद का विरोध क्यों किया?
12. स्वराज्य से गांधी का क्या तात्पर्य था? नए भारत के बारे में उनकी क्या सोच थी?
13. गांधी ने स्कूल के संदर्भ में गांवों की क्या भूमिका बताई है?
14. गांधी ने उत्पादक हस्तशिल्प को स्कूली पाठ्यक्रम का केन्द्र बिन्दु बनाने का प्रस्ताव क्यों रखा?
15. महात्मा गांधी के शिक्षा के बारे क्या विचार हैं? उल्लेख कीजिये।

/ / / / / / /

| इकाई क्र. | पठन सामग्री क्र. | शीर्षक |
|---|---|---|
| 6 | 17 | शिक्षा और विषमता |

**मुख्य अवधारणाएँ–**

**प्रश्न–**

1. अंग्रेजी शासन काल में जन शिक्षा के क्या उद्देश्य था?
2. स्वतंत्रता के बाद क्या शिक्षा एक समान अधिकार और सुविधा वाले जनतंत्री समाज की स्थापना करने का माध्यम बन सकी? अपने विचार लिखिये।
3. शिक्षा समाज में समानता लाने के बजाय उसे दो हिस्सों में कैसे बाँट दिया?
4. क्या अंग्रेजी भाषा की शिक्षा समाज में समान अवसर का आधार बन सकती है? अपने विचार लिखिये।
5. पब्लिक स्कूल से आप क्या समझते हैं? सरकारी स्कूल और इनमें क्या अन्तर है?
6. गरीब बच्चों को योग्यता के आधार पर पब्लिक स्कूल में मिलने पर आपके क्या विचार हैं?